श्रीकोठारी बन्धु शोर्य स्मृति ट्रस्ट (अ.भा. माहेश्वरी महासभा द्वारा प्रवर्तित)

त्याग एवं बलिदान सदैव भारतीय संस्कृति के मूलाधार रहें है। इस पवित्र भूमि पर ऐसे महापुरूषों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने मानव कल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। परहित साधना की भावना के प्रवाह ने "वसुधैव कटुम्बकम" के गूंजते स्वरों ने चिरकाल से हमारे जनमानस को सत्कर्म करने प्रेरणा दी है। धरती पर उनका यशोगान हुआ जिन्होंने 'स्व' की संकुचित सीमा से निकल कर 'पर' के लिए अपना बलिदान कर दिया।

अविचल भाव से प्राणोत्सर्ग करने के पीछे मूल भावना सदैव "धर्म प्रतिष्ठा' ' की रक्षा ही है और धर्म के स्परूप अनेक है। देवराज इन्द्र की प्रार्थना पर महर्षि दधिचि ने अपनी देह त्याग दी ताकि उनकी अस्थियों से निर्मित अस्त्र से वृषासुर राक्षस का विनास हो सका। बाज के आक्रमण से भयभीत एक कपोत त्राण प्राप्ति की इच्छा से राजा शिवी की गोद में जा बैठा और उन्होंने उसे निराश नहीं किया तथा अपने शरीर का एक भाग बाज को दे दिया, उदाहरणों का अन्त नहीं कभी राष्ट्र धर्म, कभी नागरिक धर्म, कभी पर सेवाधर्म और न जाने कितने रूपों में धर्म परिभाषित रहा और उत्साह पूर्वक प्राणोत्सर्ग करते हुए धर्म प्रतिष्ठा की रक्षा करते रहें।

भारत वर्ष की इस गौरवमयी परम्परा को जीवन्त रखने में राजस्थान का योगदान सर्वोपरि रहा है, यहां की मिट् टी से उपजे, यही की प्राणवायु से स्पदित माहेश्वरी समाज ने उत्सर्ग के कई प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किए। कहने को तो माहेश्वरी समाज प्रमुख रूप से उद्योग-व्यापार करने वाला कहा जाता है, पर धर्म राष्ट्र और मानवता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में भी कभी यह समाज पीछे नहीं रहा है और श्री रामकुमार कोठारी तथा श्री शरदकुमार कोठारी का बलिदान इसी श्रृंखला में जुड़े मोती है।

कोठारी बन्धुओं ने अपना बलिदान राम जन्म भूमि को लेकर हिन्दू समाज के मस्तक पर सदियों से लगे हुए कलंक को मिटाने के लिए किया था। भारतीय संस्कृति के मूलाधार एवं हिन्दूओं के आराध्य भगवान श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में उनके मन्दिर के पुननिर्माण हेतु कार सेवा के आव्हान में सन् 1990 में जो जनमानस उमडा था, उनमें कईयों को शासन की हठधर्मी के कारण अपनी जान गंवानी पडी। कारसेवा में योगदान बहुतों ने किया पर गुम्बद पर विजयपताका फहराने में, श्रीराम जन्म भूमि के गौरव तथा उसकी अस्मिता की रक्षा करने में अपने जीवन का बलिदान देकर कोठारी बन्धुओं ने माहेश्वरी समाज ही नहीं पूर भारत को सदा-सदा के लए अविस्मरणीय प्रेरणा दी।

दिसम्बर 1990 की अपनी कलकत्ता बैठक में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा ने निर्णय लिया कि कोठारी बन्धुओं की बलिदान की स्मृति दीपशिखा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए "श्री कोठारी बन्धु शोर्य स्मृति ट्रस्ट" का गठन किया जाये और भारत की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी में पंजीकृत कराकर इसको मूर्तरूप दिया।

9 अगस्त 1993 को गठित इस ट्रस्ट ने अब तक समाज की उन बारह विभूतियों को शोर्य पुरस्कार से सम्मानित किया, जिन्होंने "धर्म" के किसी न किसी स्वरूप की रक्षा की, इस पुनीत कार्य में कुछ को अपना अमूल्य जीवन की आहुति भी देनी पडी है। ट्रस्ट की योजना है कि शोर्य पुरस्कार राष्ट्र के एक विशिष्ट पुरस्कार के रूप में स्थापित हो तथा आवश्यकता है कि हम अपने अस्मिता एवं भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं उत्कर्ष के महत्वपूर्ण कार्यों के प्रति समर्पित है।

Demo Version - Winnovative Software Components

मानव का उद्देश्य और मानव जीवन की सार्थकता, केवल इसी में है कि वह अपने कल्याण के साथ दूसरों के कल्याण का भी चिन्तन करें। उसका कर्तव्य है कि स्वयं लिए उठे और दूसरों को भी उठाये आर्त, दीन, अभक्त और असहाय व्यक्तियों की सहायता के लिए अपने तन-मन-धन का समर्पण करने वाले मानव का सम्मान समाज का अपना सम्मान है। इस योजना का शुभ संकल्प आप सबसे सहयोग के बिना पूरा नहीं होगा। हमें विश्वास है कि अपनी योजना को साकार रूप प्रदान करने में हमें आप सबके आर्थिक सहयोग एवं पूर्ण संरक्षण का अनवरत लाभ प्राप्त होता रहेगा। इस पुनीत यज्ञ में आपसे सहयोग की आशा करते हैं ट्रस्ट को प्रदत्त दान आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

जानकी बल्लभ करवा गोवर्धनलाल झंवर
प्रबन्धन्यासी अध्यक्ष

पंजीकृत कार्यालय
सी.के. 25/4, चौक
वाराणसी - 221 001